प्रभाती : देखो उलटी रीत जगत की

देखो उलटी रीत जगत की, पीवै जहर अमी त्यागे |
सुख मारग में कोई कोई चाले, दुःख मारग में स भागे || टेर ||

खीर खांड का भोजन त्यागे, दारू की बोतल मांगे |
कर्महीन क लिख्या कांकरा, मुर्दा की हाड्या चाबे || १ ||

धर्मकथा पर पीसो कोनी चोढ़े, कू रस्ता सौ सौ आगे |
रांड भांड में घर फुन्क्यावे, घर बिना बाधा सागे || २ ||

हिन्दू होली तुरक ताजिया, बे नाचे बे राह गाजे |
इतना प्रेम करे मालिक का, जम का सोटा ना लागे || ३ ||

एक मारगियो बगे देहनो, दूजो बगे उनके डाबो |
दोन्या के बीच मुक्ति को गेलो, रामजीलाल वहा जाबो || ४ ||

जय श्री नाथजी की...